श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड़, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

(2)

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर प्रथमवर्ष - 2

शहर Answer sheet 2021-22

विद्यार्थी का नाम ____________________

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	પંચ પરમેષ્ટિ
(२)	ચક્રેશ્વરી
(३)	આહાર
(४)	અભયદાન
(५)	નિયંત્રણ
(६)	અષ્ટ પ્રવચન માતા
(७)	ઓમ
(८)	કરકસર
(९)	સર્વભક્ષી
(१०)	કાંટે
(११)	અભિનિવેશ
(१२)	શીલ
(१३)	ઉપાધ્યાય
(१४)	नींव
(१५)	વીર્ય
(१६)	અંગ પ્રદર્શન
(१७)	તામસિક
(१८)	સંતોષ
(१९)	આર્ય સંસ્કૃતિ
(२०)	વ્યક્તિ

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	નિંદા
(२)	ભાષાસમીતિ
(३)	જયણા
(४)	ઋષભસેન
(५)	સંસાર
(६)	ભાવ તપ
(७)	શીલ
(८)	બેઇન્દ્રિય
(९)	મિથ્યાત્વી દેવી
(१०)	અજીર્ણ
(११)	ન્યાય સમ્પન્ન
(१२)	પરિગ્રહ વિરમણ
(१३)	અસંખ્ય
(१४)	ધરણેન્દ્ર
(१५)	બાહુબલી

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	શક્તિ અનુસાર
(२)	ગુમાન
(३)	કણિઆ કા
(४)	દો પ્રકાર
(५)	તપ
(६)	પ્રાણ
(७)	અપર્યાપ્ત
(८)	સાત
(९)	ગુડવેલ
(१०)	ઉપયોગ
(११)	પ્રત્યેક
(१२)	બિજલી
(१३)	માંડલિક
(१४)	જ્ઞાન
(१५)	ઉત્તમ ચારિત્ર
(१६)	દે ક્ષામાક્ષમણ
(१७)	~~કબૂતર~~ કાઈ
(१८)	વિકલેન્દ્રિય
(१९)	જીવ સ્થાન
(२०)	હલ્દી

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	4	(६)	1
(२)	9	(७)	8
(३)	3	(८)	5
(४)	6	(९)	2
(५)	10	(१०)	7

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	6
(२)	8
(३)	36
(४)	7
(५)	48,000
(६)	4
(७)	12
(८)	10
(९)	5
(१०)	500

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	8
(२)	×	(२)	16
(३)	✓	(३)	18
(४)	×	(४)	6
(५)	✗	(५)	2
(६)	✓	(६)	15
(७)	×	(७)	21
(८)	✓	(८)	7
(९)	✓	(९)	15
(१०)	✓	(१०)	22

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ____________________ जांचनेवाले की सही ____________________

प्रश्न - ८

उचित विवाह

१. उचित विवाह ऐसे सुखी एवं शांति पूर्ण जीवन की नींव समान है। विवाह हमेशा समान कुल एवं खानदान में होना चाहिये क्योंकि दोनो परिवार और व्यक्तियो के बीच विचारो और आचारो मे रीतरिवाज मे समानता का होना अति आवश्यक है। जब दोनो परिवारो मे असमानता हो तो सब में तफावत आयेगी जिससे मतभेद हुए बिना नही रहता। संसार छोडने जैसा व संयम लेने जैसा है लेकिन ये सबके लिए संभव नही है। अतः विवाह संबंध की बात की है।

शरीर तथा मन पर्याप्ति

२. शरीर पर्याप्ति - आहार के पुद्गलो मे से बने हुए रस के द्वारा जिस शक्ति से जीव सात रस धातुमय शरीररूप मे परिणमावे वह शरीर पर्याप्ति है मन पर्याप्ति - मन योग्य मनो वर्गणा के पुद्गल लेकर मन रूप में रूपांतरित कर ग्रहण करके छोडने की शक्ति विशेष वह मन पर्याप्ति है। जीव जब विषय चिंतन मे समर्थ होता है तब इस पर्याप्ति की समाप्ति होती है

ओम्

३. ओम् धार्मिक चिन्ह है कोई भी अच्छा या शुभ कार्य के लिये लिखना हो तो उनकी शुरूआत ओम से की जाती है। जैन दर्शन मे इसे पंच-परमेष्टि का सार माना जाता है। इससे ओम पंचपरमेष्टि का सार है। संस्कृत मे ओम शब्द पांच अक्षरो से बना है। ये 5 अक्षर इस प्रकार है अ + अ + आ + उ + म् - ओम्।

धर्मचक्र तीर्थ

४. एक बार बहली देश के तक्षशीला नगरी के उद्यान में प्रभु कायोत्सर्ग ध्यान मे रहे। बाहुबली को प्रभु के आगमन के समाचार मिलने पर वो आनंदित हुए व सकल सामग्री के साथ प्रातः वन्दन करने जाऊंगा लेकिन सुबह जब वह उद्यान मे पहुंचे तब प्रभु वहां से जा चुके थे। परन्तु जहां प्रभु कायोत्सर्ग ध्यान मे खडे थे. वहां पर रत्नपीठिका बाहुबली ने बंधायी। उसपर प्रभुकी पादुका प्रतिष्ठित की और वहां पर धर्मचक्र तीर्थ की स्थापना की।

साधारण वनस्पतिकाय अभक्ष्य क्यों

५. साधारण वनस्पतिकाय मे अनंत जीव है इसलिए वो अभक्ष्य कहा गया है। जीवन जीने के लिये भोजन लेना तो आवश्यक है लेकिन कम से कम जीवो को तकलीफ देकर भोजन करना। सा.व. का खाने मे उपयोग करे तो अनंतानंत जीवो के घात का पाप ललाट पर लिखा जायेगा व हिंसा का दोष लगेगा। इसके भक्षण से जीवन मे जीवदया के परिणाम विदा हो जायेंगे और हृदय कठोर बनता जायेगा।